

INHALT

| | |
|--|-----|
| Heimatgefühle | 7 |
| Von Togo nach Deutschland | 9 |
| Jungs überleben immer..... | 9 |
| Im Flieger..... | 10 |
| Deutschland..... | 11 |
| Tag 1 in Deutschland..... | 12 |
| Togo – Deutsch-Süd-West..... | 20 |
| Meine Zeit im Heim | 22 |
| Die Welt des Fußballs | 27 |
| Erste Schritte..... | 27 |
| Fußball und die Verschmelzung der Kulturen | 33 |
| Bayer 04-Struktur..... | 38 |
| Angekommen | 43 |
| Togo | 47 |
| Reparatur und Neuanfang..... | 68 |
| Zurück auf dem Grün..... | 72 |
| Afrika-Cup..... | 73 |
| Der 8. Januar 2010..... | 81 |
| Selbstreflexion..... | 93 |
| Zurück in die alte Heimat | 104 |
| Eine Welt mit und neben dem Fußball..... | 109 |
| UPS und ich..... | 109 |
| Diskriminierung jenseits der Hautfarbe | 114 |
| Tür auf..... | 120 |
| Back to Bayer, back to Life..... | 126 |
| Positive Energie und Liebe..... | 128 |
| Stärken stärken..... | 134 |
| In der Tiefe liegt die Kraft..... | 135 |
| Diskriminierung und Rassismus | 139 |
| Hamilton-Syndrom? | 150 |
| »Jung, wo kommst Du denn von ab?« | 153 |
| Schnelle Botschaften | 159 |
| Ressourcen..... | 161 |
| Meine Gedanken zu Afrika | 165 |
| Schlussgedanken: Zwei Herzen | 171 |
| Danksagung | 175 |